

रॉबर्ट वानॉय, भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 11

पैगम्बर और पंथ, क्या पैगम्बर लेखक थे?

समीक्षा: क्या पैगम्बर लेखक थे?

बी। द लिटरेरी क्रिटिकल स्कूल ने भविष्यसूचक पुस्तकों की रचना के बारे में हैंडआउट में पूछा, "क्या भविष्यवक्ता लेखक थे?" हमने पारंपरिक दृष्टिकोण को देखा कि भविष्यवक्ता लेखक थे। हमने बी., "द लिटरेरी क्रिटिकल स्कूल" से शुरुआत की, जो पैगंबरों को लेखक के रूप में भी देखता था, लेकिन फिर भविष्यवाणी की किताबों में यह छांटने का प्रयास करता था कि क्या प्रामाणिक था, पैगंबर के हाथ से क्या था जिसका नाम दिया गया है पुस्तक, और उसे बाद के परिवर्धनों से क्रमबद्ध करना। मैंने पिछली बार उन दो पुस्तकों का उल्लेख किया था जिन पर सबसे अधिक ध्यान केंद्रित किया जाता है जहां तक आलोचनात्मक विद्वता का सवाल है, यशायाह और डैनियल हैं। मुझे लगता है कि यशायाह और डैनियल पर ध्यान देने का एक कारण उल्लेखनीय दीर्घकालिक भविष्यवाणियाँ हैं जो यशायाह के दूसरे भाग के साथ-साथ डैनियल के अनेक दर्शनों में पाई जाती हैं। जिनके पास ज्ञानवर्धक विश्वदृष्टिकोण के साथ ऐतिहासिक-आलोचनात्मक प्रकार की मानसिकता है, जो मानवीय मामलों में अलौकिक और दैवीय हस्तक्षेप के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं और निश्चित रूप से दैवीय रहस्योद्घाटन को उस तरह से नहीं देखते हैं जिस तरह से बाइबिल इसका प्रतिनिधित्व करती है। उन्हें साइरस के संदर्भ में एक समस्या है, उदाहरण के लिए यशायाह के दूसरे भाग में, जो यशायाह भविष्यवक्ता के बाद लंबे समय तक जीवित रहे, या आपके पास डैनियल की पुस्तक के साथ-साथ डैनियल की दीर्घकालिक भविष्यवाणियां भी हैं। ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में रहने वाले एंटीओकस एपिफेन्स के समय की विशिष्ट युगांतशास्त्रीय सामग्री के संबंध में डैनियल को इसके बारे में कैसे पता चल सकता था? तो, निष्कर्ष निकाला गया कि यशायाह का दूसरा भाग यशायाह के पहले भाग के समान लेखक द्वारा नहीं लिखा गया था और डैनियल की पुस्तक बाद में लिखी गई थी, न कि मूल भविष्यवक्ता डैनियल द्वारा।

1. यशायाह 40-66 जारी

बी। "पुस्तक के दोनों भागों में भाषा और शैली में अंतर है।"

हमने कुछ तर्कों पर गौर करना शुरू किया जिनका उपयोग उस दृष्टिकोण के लोग यह दावा करने के लिए करते हैं कि यशायाह 40 यशायाह से नहीं है। पृष्ठ एक के नीचे उस हैंडआउट में मैंने तीन तर्कों का सारांश प्रस्तुत किया है। पहला, "यशायाह 40-66 की अवधारणाएँ और विचार पुस्तक के पहले भाग (1-39) की अवधारणाओं और विचारों से भिन्न हैं।" दूसरा, "पुस्तक के दोनों भागों में भाषा और शैली में अंतर है।" तीसरा, "ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और तथ्य में अंतर हैं।" हमने पहले तर्क में प्रतिक्रियाओं के माध्यम से काम किया था कि यशायाह 40-66 में अवधारणाएँ और विचार पुस्तक के पहले खंड में निर्विरोध खंडों की अवधारणाओं से भिन्न हैं। मुझे नहीं लगता कि हमने दूसरे तर्क के साथ बहुत कुछ किया है जो पेज तीन पर है, यानी भाषा और शैली में अंतर से निकला तर्क। मुझे लगता है कि यह पहले तर्क की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण तर्क है क्योंकि पहले तर्क में व्यक्तिपरक निर्णय शामिल होता है कि एक अलग लेखक की आवश्यकता के लिए अवधारणा और विचारों में कितना अंतर होना चाहिए। जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, मुझे कोई कारण नहीं दिखता कि भगवान यशायाह को प्रभु के सेवक विषय के बारे में सामग्री उसके बहुत लंबे मंत्रालय के आरंभ के बजाय बाद के भाग में प्रकट नहीं कर सके। यह एक नई अवधारणा है लेकिन इसके लिए किसी नए लेखक की आवश्यकता नहीं है।

जब आप भाषा और शैली पर आते हैं तो तर्क अधिक महत्वपूर्ण होता है। ड्राइवर 40-66 में आने वाले कई शब्दों को सूचीबद्ध करता है लेकिन 1-39 में नहीं या ऐसे शब्द जो 40-66 में अक्सर आते हैं लेकिन 1-39 में शायद ही कभी आते हैं। तो उस विशेष परिप्रेक्ष्य से आप शब्द के उपयोग को देखना शुरू करते हैं और आपको अंतर दिखाई देता है। इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि आपको पुस्तक के दूसरे भाग में पहले की तुलना में अलग-अलग शब्द या अभिव्यक्तियाँ मिलें क्योंकि विषय-वस्तु में अंतर है। यदि आपके पास विषय वस्तु में अंतर है तो आप शब्दों के उपयोग में अंतर की अपेक्षा करेंगे। इसलिए मुझे नहीं लगता कि वह तर्क भी ठोस है।

शैली का सबसे मजबूत तर्क यह है कि कुछ भाषाई विषमताएँ जो बाद के समय के साथ चलती हैं, यशायाह 40-66 में पाई जाती हैं। ड्राइवर ने अपने *परिचय टू द ओल्ड टेस्टामेंट* में पृष्ठ 240

पर यह तर्क दिया है। इसे विस्तार से देखने के लिए बहुत अधिक समय की आवश्यकता होगी, इसलिए मैं इस पर इतना समय बर्बाद नहीं करना चाहता, लेकिन मैं आपको कुछ उदाहरण देना चाहता हूँ। एनपर एल्डर्स के काम में पुराने नियम का परिचय जिसमें वह ड्राइवर के तर्कों और अन्य पर चर्चा करता है, वह नोट करता है कि एक शैलीगत तर्क जो वे देते हैं वह दूसरे यशायाह में 'अनोकी' के बजाय पहले एकवचन 'अनी' को प्राथमिकता देना है, जैसा कि आप जानते हैं कि दोनों पहले व्यक्ति सर्वनाम हैं। ऐसा कहा जाता है कि यह बाद के समय में भाषाई उपयोग को इंगित करता है। यशायाह 40-66 में 'अनी' 79 बार आती है 'अनोकी' 29 बार आती है। तो, हाँ, यशायाह 40-66 में 'अनी' को प्राथमिकता दी गई है। लेकिन यदि आप हाग्वै और जकर्याह को देखें, जो हाग्वै के संबंध में स्पष्ट रूप से निर्वासन के बाद के हैं, तो आल्डर्स क्या इंगित करते हैं, 'अनोकी' बिल्कुल भी नहीं होती है; 'अनि' 5 बार और 'अनोकी' 0 बार है। जकर्याह में 'अनि' 9 बार और 'अनोकी' 0 बार आता है। यदि आप यहजेकेल में वापस जाते हैं - हाग्वै और जकर्याह से थोड़ा पहले - तो आपको 'एनी' 162 बार और 'अनोकी' 1 बार मिलता है। वहाँ एक घटना है। आल्डर्स ने जो नोट किया है वह यह है कि यशायाह 40-66 के समय में 'अनोकी' का उपयोग न करने की प्रवृत्ति यहजेकेल के समय तक आगे नहीं बढ़ी थी। इससे पता चलता है कि यशायाह यहजेकेल से भी पहले का है। दूसरे शब्दों में, यशायाह के दूसरे भाग में एक उपयोग पैटर्न है जो निर्वासन के बाद के समय में फिट नहीं बैठता है। तो यशायाह को यहजेकेल से पहले होना चाहिए। तो आप इनमें से कुछ भाषाई उपयोग वाली चीज़ों को देख सकते हैं और उनके बारे में प्रश्न उठा सकते हैं।

मुझे लगता है कि सिक्के के दूसरी तरफ, यानी पृष्ठ 4 पर, आप पुस्तक में दो खंडों के बीच भाषाई सहमति के बिंदु भी पा सकते हैं जिन्हें आप भाषाई विषमताएं कह सकते हैं। उदाहरण के लिए, भविष्यवक्ताओं द्वारा प्रयुक्त बारंबार अभिव्यक्ति, "प्रभु यों कहता है," का यशायाह में एक रूप है और वह रूप केवल यशायाह में होता है। वह संस्करण पूर्ण "अमर" को अपूर्ण "योमर" से प्रतिस्थापित करता है और इस प्रकार टिकाऊ कार्रवाई का संकेत देता है, "इस प्रकार भगवान कह रहे हैं।" वह संस्करण यशायाह के लिए अद्वितीय है। इसका उपयोग 1-39 के साथ-साथ 40-66 में भिन्न संदर्भों में किया गया है, और ऐसे और भी संदर्भ हैं जो संपूर्ण पुस्तक में विस्तारित हैं। तो तथ्य यह है कि यह अभिव्यक्ति सभी भविष्यवक्ताओं में आम है, लेकिन यह यशायाह में एक प्रकार में

होती है और यशायाह के दोनों खंडों में भिन्न रूप में होती है, यह निश्चित रूप से एकाधिक लेखकों के बजाय लेखकत्व की एकता की ओर एक संकेतक है।

1) यशायाह में शैली के तर्क का खंडन करते हुए राचेल मार्गालियोथ अब मैं 'अनोकी' के उपयोग और *योमर* की अपूर्णता के वे दो उदाहरण देता हूँ क्योंकि जब आप भाषाई उपयोग के इस रूप में आते हैं तो यह बहुत जल्दी बहुत जटिल हो सकता है। मुझे लगता है कि यदि आप इसमें रुचि रखते हैं और इसे करने के लिए समय लेते हैं और इस पर चर्चा करने वाले कुछ साहित्य को देखते हैं, तो आप पाएंगे कि तर्क दोनों तरफ जाते हैं। यह उतना स्पष्ट नहीं है जितना लगता है। पुस्तक के पहले भाग की भाषा और शैलियाँ पुस्तक के दूसरे भाग की तुलना में भिन्न हैं। राचेल मार्गालियोथ नाम की एक महिला द्वारा *द इंडिविजिबल इसैयाह* नामक एक अध्ययन किया गया है। यह प्रिंट से बाहर है लेकिन बहुत उपयोगी पुस्तक है। वह भाषा और शैली में सहमति के आधार पर पुस्तक की एकता के लिए प्रभावी ढंग से तर्क देती है। दूसरे शब्दों में, तर्क उल्टा हो जाता है। यदि आप पृष्ठ 14 पर अपने उद्धरणों को देखते हैं, तो उस बड़े पैराग्राफ में पृष्ठ के मध्य तक जाएं, जो पृष्ठ 14 के मध्य से शुरू होता है, मार्गालियोथ कहते हैं, "क्रॉस ने अठारह शब्दों और अभिव्यक्तियों की गणना की है जो यशायाह 'दूसरे' के लिए 'अजीब' हैं।" उनमें से कई, जैसा कि वह स्वीकार करते हैं, यशायाह 'प्रथम' में भी पाए जाते हैं, लेकिन उन अध्यायों में जिन्हें क्रॉस यशायाह को 'दूसरा' बताते हैं।" अब यह कुछ महत्वपूर्ण विद्वानों के लिए एक संकेत है कि वे आदर्श हैं पाठ पर थोपना यशायाह के उस भाग में फिट नहीं बैठता। "लेकिन यदि ऐसी अभिव्यक्तियाँ कहीं अधिक संख्या में पाई भी जाएँ, तो उससे क्या प्रमाण निकाला जा सकता है? क्या किसी अन्य अध्याय में विशेष शब्द या अभिव्यक्तियाँ कुछ सिद्ध करती हैं? क्या यह तथ्य इस अध्याय या किसी अन्य अध्याय को पुस्तक के मुख्य भाग से अलग करने का आधार देता है? भविष्यवक्ताओं में एक या अधिक शब्द का कुछ अध्यायों में कई बार आना असामान्य नहीं है, हालाँकि वे पिछले अध्यायों में एक बार भी नहीं पाए जाते हैं। अभिव्यक्ति "प्रभु का प्रतिशोध" लें, जो यिर्मयाह 50 और 51 में कई बार प्रकट होता है, लेकिन पूरी किताब में दोबारा नहीं मिलता है। क्या इन दोनों अध्यायों को पुस्तक से अलग करने का यह पर्याप्त कारण है?" वह जो कह रही है वह सिर्फ इसलिए है क्योंकि आपके पास दो शब्द हैं जो वहाँ दिखाई

देते हैं जो कहीं और नहीं होते हैं, क्या इससे आपको यह सवाल करने का कोई कारण मिलता है कि क्या यिर्मयाह ने उन दो अध्यायों को लिखा था?

“या फिर यह अभिव्यक्ति 'तलवार से मारा गया' यहजेकेल 31 और 32 में कम से कम दस बार पाई जाती है, लेकिन पिछले अध्यायों में एक बार भी प्रकट नहीं होती है। क्या ईजेकील 31 दूसरा ईजेकील शुरू करता है? प्रत्येक भविष्यवाणी पुस्तक में केवल एक अध्याय में या अध्यायों के समूह में कई बार आने वाले असंख्य शब्दों, वाक्यांशों, अभिव्यक्तियों को इंगित करना संभव है, पुस्तक में कहीं और नहीं। फिर हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि ऐसे शब्दों और वाक्यांशों को संदर्भ के संदर्भ में पसंद किया जाता है।

2) यशायाह की एकता के लिए मार्गालियोथ के तर्क आप देखते हैं, यदि आपकी भाषा अलग है तो यह चर्चा के किसी भी विषय से अधिक जुड़ी हो सकती है या पैगंबर उन विशेष अध्यायों में जो विशिष्ट संदेश दे रहा है। "जहां तक इस तर्क का संबंध है कि यशायाह की पुस्तक के दो खंड भाषा और शैली में भिन्न हैं, जो बेन जीव के साथ होता है, वह एक ऐसी बात है जिसे उदाहरण से सिद्ध नहीं किया जा सकता है, हम इस पुस्तक में सैकड़ों उदाहरणों द्वारा प्रदर्शित करेंगे, कि विपरीत सत्य है. दोनों खंड न केवल भाषा और शैली दोनों में समान हैं, बल्कि वे अपनी एकता के लिए उल्लेखनीय हैं क्योंकि उनके बीच की समानता को किसी भी प्रभाव के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है... यहां की प्रणाली दोनों भागों की एकता को प्रदर्शित करने जा रही है," और यह अगला पैराग्राफ पृष्ठ 4 पर उस हैंडआउट पर है जहां मार्गालियोथ उन प्रणालियों का वर्णन करती है जिनका वह उपयोग करती है, "यशायाह की पुस्तक को विषय के आधार पर वर्गीकृत करने के बाद हमने दिखाया है कि प्रत्येक विषय के संबंध में दोनों भाग असंख्य समान अभिव्यक्तियों का उपयोग करते हैं जो केवल इस पुस्तक के लिए विशिष्ट हैं। यह भी सिद्ध हो चुका है कि विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ दोनों भागों में समान शक्ति के साथ-साथ समान उपयोग को भी प्रकट करती हैं। यहां तक कि सामान्य अभिव्यक्तियाँ भी दोनों में समान एक विशेष उपयोग से भिन्न होती हैं। दूसरा खंड पहले के शब्दों को उलट देता है। आप पृष्ठ 4 और पृष्ठ 5 और पृष्ठ 6 पर ऐसे विषय पाएंगे जिनका उपयोग वह विषय सामग्री के आधार पर यशायाह की पुस्तक को वर्गीकृत करने के लिए करती है।

मैं वह सारी सामग्री नहीं पढ़ूंगा, लेकिन आइए उसके कुछ विषय वर्गीकरणों पर नजर डालें। नंबर 1, "ईश्वर के पदनाम" और वह जो सूचीबद्ध करती है वह दिव्य उपाधियाँ हैं जो विशेष रूप से यशायाह में उपयोग की जाती हैं जो दोनों भागों में समान पाई जाती हैं। दूसरे शब्दों में, ईश्वर के लिए पदनाम कहीं और नहीं पाए जाते - उदाहरण के लिए, "इज़राइल का पवित्र", पुस्तक के दोनों हिस्सों में पाया जाता है। या "इज़राइल के लोगों के पदनाम", यहूदी लोगों के संबंध में ग्यारह विशिष्ट विशेषण हैं जो दो वर्गों में पाए जाते हैं। संख्या 9 देखें "चेतावनी के शब्द;" फटकार के इक्कीस अलग-अलग शब्द यशायाह के लिए विशिष्ट और दोनों भागों में समान हैं। संख्या 10, "ताड़ना के शब्द;" उन्तीस शब्दों में पतन का विशिष्ट वर्णन, यशायाह के दोनों खंडों की शैली में समान। तो ऐसे पंद्रह विषय हैं जो यशायाह की पुस्तक के दोनों भागों में व्यक्त किए गए हैं, और कई मामलों में यशायाह की पुस्तक के लिए अद्वितीय हैं। इसलिए मुझे लगता है कि मार्गालियोथ ने इस शैली और भाषा के तर्क को अपनाया है और पुस्तक और एक लेखक की एकता के लिए एक बहुत अच्छा मामला बनाया है। हम कुछ ही मिनटों में इस पर वापस आने वाले हैं।

3) पुनर्क्रियात्मक एकता

लंबे समय तक ये आलोचनात्मक तर्क इस क्षेत्र पर हावी रहे और अधिकांश बाइबिल विद्वानों को यह विश्वास दिलाया कि यशायाह की पुस्तक के कई लेखक थे और यह ड्राइवर और अन्य लोगों के तर्कों पर आधारित था। पुस्तक के दोनों भागों में भाषा और शैली की एकता के लिए मार्गालियोथ के तर्कों को अब आलोचनात्मक विद्वानों द्वारा भी स्वीकार किया जा रहा है। लेकिन यह उन्हें इस निष्कर्ष पर नहीं ले जाता कि यशायाह पुस्तक के लेखक थे। वे अब क्रांतिकारी एकता की बात करेंगे। दूसरे शब्दों में, इन अन्य लेखकों ने यशायाह की शैली का अनुकरण किया, इसलिए आपको एक रचनात्मक एकता तो मिलती है लेकिन एक भी लेखक नहीं। मैंने कहा कि मैं उस पर बाद में वापस आऊंगा। लेकिन इस तर्क के जवाब में जो मार्गालियोथ और अन्य ने दिया है, पृष्ठ छह के मध्य को देखें।

4) मार्क रूकर भाषाई उपयोग और यशायाह के विषय पर हालिया चर्चा के लिए मार्क

रूकर देखें, "यशायाह 40-66 डेटिंग: भाषाई साक्ष्य क्या कहते हैं?" वह वेस्टमिंस्टर थियोलॉजिकल जर्नल खंड में था। 1996 में 58—यदि आप इस प्रकार की चीज़ों में रुचि रखते हैं तो यह एक बहुत ही उपयोगी लेख है। इस लेख में रूकर कई उदाहरण देते हैं कि कैसे ईजेकील और निर्वासन के बाद हिब्रू में भाषाई उपयोग लगातार बाद की भाषाई विशेषताओं को दर्शाता है जो हम यशायाह 40-66 में पाते हैं। यह फिर से कुछ हद तक तकनीकी हो जाता है लेकिन वह एक बहुत अच्छा मामला बनाता है और बहुत ठोस उदाहरण देता है। उनका निष्कर्ष यह है कि यदि "महत्वपूर्ण विद्वान इस बात पर जोर देना जारी रखते हैं कि यशायाह को निर्वासन या निर्वासन के बाद की अवधि में दिनांकित किया जाना चाहिए, तो उन्हें डायक्रोनिक विश्लेषण से विपरीत सबूतों के सामने ऐसा करना चाहिए," अर्थात्, विश्लेषण जो विकास के इतिहास का उपयोग करता है हिब्रू भाषा और समय के माध्यम से भाषाई उपयोग।

भाषा और शैली के तर्क पर मेरा निष्कर्ष यह है कि यह इनमें से किसी भी स्थिति के लिए अंतिम प्रमाण प्रदान नहीं कर सकता है, हालांकि ऐतिहासिक अध्ययन प्रामाणिकता और एकता के लिए सबसे मजबूत तर्क प्रदान करते हैं। किसी भी मामले में यह निश्चित रूप से सच है कि भाषा और शैली पर विचार करने के लिए यशायाह में दो या दो से अधिक लेखकों की आवश्यकता नहीं है - यह मेरा कहना है।

5) भाषाई डेटा का कंप्यूटर विश्लेषण अब एक अन्य मुद्दा जो कभी-कभी इस विशेष चर्चा में आता है वह भाषाई उपयोग का कंप्यूटर विश्लेषण है जो बाइबिल के अध्ययनों में दिखाई देने लगा है। यदि आप यशायाह की पुस्तक पर जॉन ओसवाल्ट की एनआईसीओटी टिप्पणी में अपने उद्धरण के पृष्ठ 15 को देखें जहां वह इस मुद्दे पर चर्चा कर रहे हैं। वह कहते हैं, "रचना में एकता की कमी के वस्तुनिष्ठ प्रमाण की सबसे निकटतम चीज़ वाई. रैडडे की प्रभावशाली जांच, *द यूनिटी ऑफ़ इसैया इन लाइट ऑफ़ स्टैटिस्टिकल लिंग्विस्टिक्स में दिखाई देती है*। रैडडे ने यशायाह की पुस्तक की कई भाषाई विशेषताओं का कम्प्यूटरीकृत अध्ययन किया और पुस्तक के विभिन्न खंडों में उनकी तुलना की। नियंत्रण के रूप में उन्होंने बाइबिल और अतिरिक्त बाइबिल दोनों साहित्य के अन्य टुकड़ों का अध्ययन किया, जिनके बारे में माना जाता है कि वे एक ही लेखक से आए थे। इन शोधों

के परिणामस्वरूप उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि भाषाई विविधताएँ इतनी गंभीर थीं कि एक लेखक यशायाह की पूरी पुस्तक का निर्माण नहीं कर सकता था। जैसा कि उम्मीद की जा सकती है, इन निष्कर्षों का आलोचनात्मक विद्वानों द्वारा अनुमोदन के साथ स्वागत किया गया, जिन्होंने अपनी स्थिति को सही साबित होते देखा...

रैडडे की कार्यप्रणाली से कई प्रश्न उठ सकते हैं। सांख्यिकीय भाषाविज्ञान के क्षेत्र की प्रारंभिक अवस्था ही कुछ प्रश्न उठाती है। यहाँ एक बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदु है। "क्या हम अभी भी किसी व्यक्ति के उपयोग में भिन्नता की संभावित सीमाओं के बारे में विश्वास के साथ बोलने के लिए पर्याप्त जानते हैं?" यदि आप साठ वर्षों के जीवनकाल को देखें तो समय के साथ किसी व्यक्ति का भाषाई उपयोग कितना बदल जाता है? "इसमें से कोई भी उस अखंडता पर सवाल नहीं उठा रहा है जिसके साथ रैडडे का अध्ययन किया गया और निष्पादित किया गया था, लेकिन यह इंगित करना है कि साक्ष्य अभी भी पांडुलिपि के रूप में उद्देश्यपूर्ण नहीं है जिसमें अध्याय 1-39 दिखाई देगा।

अब दो फुटनोट हैं। आपने देखा कि "किसी व्यक्ति के भाषाई उपयोग में भिन्नता की सीमा" के बारे में उस प्रश्न के ठीक बाद 5 नंबर का फुटनोट है। पाँच यहाँ अनुसरण करते हैं, "ध्यान दें कि पुस्तक की विशेषताओं के एक अन्य प्रकार के कम्प्यूटरीकृत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि यह एक एकात्मक रचना है।" दूसरे शब्दों में, कंप्यूटर विश्लेषण और उससे निकले निष्कर्ष भिन्न-भिन्न हैं। आर. पॉस्नर के एक अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि रचना एक एकता नहीं है, लेकिन उनके परिणामों ने रैडडे की तुलना में पुस्तक के विभिन्न विभाजनों की ओर इशारा किया। अब आप देखते हैं कि किसी भी प्रकार के कंप्यूटर विश्लेषण के कई परिणाम होते हैं, यह इस पर निर्भर करता है कि आप विश्लेषण करने के लिए प्रोग्राम कैसे सेट करते हैं - इसमें बहुत सारे कारक होते हैं।

दूसरा फुटनोट दिलचस्प है। नंबर छह, "यह विडंबना है कि जिन लोगों ने यशायाह पर लागू होने वाली रैडडे की पद्धति की विश्वसनीयता की सराहना की, वे इसकी विश्वसनीयता के बारे में बहुत कम आश्वस्त थे जब उन्होंने हाल ही में रिपोर्ट दी कि उसी पद्धति ने उत्पत्ति की एकता स्थापित की।" इसलिए आलोचनात्मक सिद्धांतों के लिए वह तर्क दोनों तरीकों से कटता है। उत्पत्ति के साथ एक तरीका, यशायाह के साथ दूसरा तरीका। निःसंदेह अगले दशक में बाइबिल लेखों के कंप्यूटर

विश्लेषण का बहुत अधिक उपयोग होगा और निष्कर्ष निकाले जाएंगे। यह देखना दिलचस्प होगा कि यह कैसे विकसित होता है, लेकिन इस बिंदु पर भी यह कुछ ऐसा नहीं है जिसके साथ निर्णायक निष्कर्ष निकाला जा सके। मुझे नहीं लगता कि भाषा और शैली पर आधारित तर्क किसी भी तरह से निर्णायक होते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि आप जो कह सकते हैं वह यह है कि तर्क कहते हैं कि आप निर्णायक रूप से इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि यशायाह पुस्तक के दूसरे भाग के लिए जिम्मेदार हो सकता है।

3. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से तर्क

तीसरा तर्क है, "ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का तर्क।" यह संभवतः सबसे महत्वपूर्ण तर्क है। मुझे लगता है कि यह निर्विवाद है कि अध्याय 40-66 1-39 की तुलना में एक अलग ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को दर्शाता है। यशायाह के शुरुआती भाग में इस्राएल के लोगों की बहुत भर्त्सना और भविष्यवाणी है कि भगवान उनके पाप के लिए राष्ट्र को निर्वासन में भेज देंगे। जब हम किताब के दूसरे भाग पर पहुंचते हैं तो आपको उस तरह की सामग्री नहीं मिलती। धारणा यह है कि वे पहले से ही निर्वासन में हैं और निर्णय पहले ही हो चुका है। पुस्तक के दूसरे भाग में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि परमेश्वर का वादा है कि उन्हें उनकी कैद से छुड़ाया जाएगा। पुस्तक के पहले भाग में आपको अशूरियों के कई संदर्भ मिलेंगे। वे इस समय इस्राएल के बहुत बड़े शत्रु थे। आहाज़ की मृत्यु हो गई है। लेकिन पुस्तक के दूसरे भाग में असीरियन नहीं बल्कि बेबीलोनियन और फारसी साइरस का उदय दिखाई देता है। बेशक, साइरस का उल्लेख नाम से किया गया है। पुस्तक के दूसरे भाग के लोग बेबीलोनियों के बंधन में हैं लेकिन उन्हें छुड़ाया जाना है। इसलिए पहली और दूसरी किताबों के बीच ऐतिहासिक दृष्टिकोण में स्पष्ट ऐतिहासिक अंतर है।

एक। स्पष्टीकरण यह देखते हुए कि यह विवाद में है, आप इसे दो तरीकों से समझा सकते हैं। आलोचक का सुझाव यह है कि पुस्तक का दूसरा भाग एक अलग लेखक द्वारा लिखा गया है जो निर्वासन के बाद रहता था जो पहले ही शुरू हो चुका था और समाप्त होने वाला था। इजराइल को अपने वतन लौटने के लिए रिहा किया जाने वाला था। दूसरे तरीके से आप इसे समझा सकते हैं कि

यशायाह ने पुस्तक के दोनों भाग लिखे लेकिन पुस्तक के दूसरे भाग में उसका उद्देश्य इस्राएल को सांत्वना देना था जब इस्राएल इस घोषणा के साथ निर्वासन में चला गया था कि ईश्वर उन्हें बचाएगा।

यदि आप यह मानते हैं कि यशायाह लेखक थे, तो आपको साहित्य में अक्सर पाए जाने वाले प्रश्न का उत्तर देना होगा: क्या कोई कारण है कि यशायाह कुछ ऐसा लिखेंगे जिसमें उनके समय के एक शताब्दी से भी अधिक समय बाद की स्थिति का संदर्भ होगा?

3. दूसरा यशायाह ऐतिहासिक रूप से भिन्न कुछ लोग कहते हैं, "नहीं, इसका कोई मतलब नहीं है।" वे इसका उपयोग यह तर्क देने के लिए करते हैं कि पुस्तक का दूसरा भाग किसी और ने लिखा है। व्हाईब्रेज़ लाइब्रेरीज़ ओल्ड टेस्टामेंट गाइड टू यशायाह पैराग्राफ बी से अपने उद्धरणों के पृष्ठ 16 को देखें, जहां वह कहते हैं, "यह स्पष्ट रूप से उन लोगों के एक समूह को संबोधित है, जिन्हें एक विजयी शक्ति द्वारा अपनी मातृभूमि से निर्वासित किया गया है, जिसे इसके द्वारा भी संदर्भित किया गया है। नाम: बेबीलोन. चार परिच्छेदों में इन शब्दों में बेबीलोन का नाम लेकर उल्लेख किया गया है और कई अन्य परिच्छेदों में इस ऐतिहासिक स्थिति की पुष्टि की गई है। अध्याय 40-55 तो, आठवीं शताब्दी में कोई मतलब नहीं होता, जब यरूशलेम और यहूदा के लोग अभी भी अपने राजाओं के शासन के तहत घर पर रह रहे थे; जब बेबीलोन, एक महान शक्ति होने से बहुत दूर, सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व के अंत में असीरिया के पतन तक, यशायाह की मृत्यु के लंबे समय बाद तक बना रहा - केवल असीरियन साम्राज्य के शहरों में से एक था; [यशायाह भविष्यवक्ता के समय में बेबीलोन असीरियन साम्राज्य का हिस्सा था।] और जब साइरस का जन्म नहीं हुआ था और फ़ारसी साम्राज्य अभी तक अस्तित्व में नहीं था। यह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का तर्क है। "दूसरी ओर, इन अध्यायों में सब कुछ बेबीलोन में यहूदी निर्वासितों के लिए छठी शताब्दी के भविष्यवक्ता के संदेश के रूप में अच्छी तरह से समझ में आता है। दूसरे शब्दों में, तर्क यह है कि यदि यशायाह ने इसे लिखा तो यह उसके समय के लोगों के लिए अर्थहीन होगा जो पूरी तरह से अलग परिस्थितियों में रहते थे। बात क्या रही होगी? तो आप प्रश्न पूछें: क्या यशायाह के अपने समकालीनों के लिए यशायाह 40-66 की कोई प्रासंगिकता है? होबार्ट फ्रीमैन के उद्धरणों के पृष्ठ 13 पर जाएँ, जिन्होंने *पुराने नियम के पैगंबरों के अपने परिचय में इसकी चर्चा की है।* उनकी टिप्पणी है, "प्रत्येक

भविष्यवाणी को किसी निश्चित समसामयिक ऐतिहासिक स्थिति से जोड़ने की आवश्यकता नहीं है, न ही यह उस पीढ़ी पर सीधे लागू होती है जिसके लिए यह बोली जाती है। इसे कायम नहीं रखा जा सकता है, जैसा कि ड्राइवर का तर्क है, कि 'भविष्यवक्ता हमेशा, सबसे पहले अपने समकालीनों से बोलता है: वह जो संदेश लाता है वह उसके समय की परिस्थितियों से घनिष्ठ रूप से जुड़ा होता है: उसके वादे और भविष्यवाणियाँ... उन जरूरतों के अनुरूप होती हैं जो फिर महसूस किया जाता है।"

बी. उस दृष्टिकोण के साथ समस्याएँ - सात्वना के शब्दों की आवश्यकता भविष्यवाणी की इस अवधारणा के स्पष्ट विरोधाभास हैं जकर्याह 9-14, जो भविष्य है, डैनियल 11-12 स्पष्ट रूप से भविष्य है, और यशायाह के पहले भाग में यशायाह 24-27, जो अक्सर होता है "छोटा सर्वनाश" कहा जाता है। वहाँ यशायाह प्रभु के दिन और अंत समय के बारे में बात करता है। यह निश्चित रूप से ऐतिहासिक स्थिति के साथ भविष्यवाणी के सामान्य संबंध को नजरअंदाज नहीं करना है, जो दोनों भविष्यवाणी कथन को दर्ज करते हैं। तो फ्रीमैन की प्रतिक्रिया यह है कि प्रत्येक भविष्यवाणी उस पीढ़ी पर सीधे लागू नहीं होनी चाहिए जिसके लिए वह बोली गई है। अधिकतर ऐसा होता है, लेकिन ऐसा समय भी आता है जब वह गूढ़ प्रकार की भविष्यवाणी आती है जो स्पष्ट रूप से एक ऐसी स्थिति को संबोधित करने के लिए बोली जाती है जो भविष्यवक्ता ने जिन लोगों से बात की थी वे सभी के चले जाने के बाद लंबे समय तक घटित होंगी।

यहां मेरी टिप्पणी हैंडआउट के पेज 7 पर वापस आ रही है जबकि फ्रीमैन जहां तक सही है, मुझे ऐसा लगता है कि अध्याय 40-66 का यशायाह के समय के लोगों के संबंध में एक उद्देश्य है। यशायाह पुस्तक के शुरुआती अध्यायों के दो उद्देश्य थे: राष्ट्र को उसके पाप के बारे में बताना और पश्चाताप करने की आवश्यकता; फिर दूसरी बात यह कि परमेश्वर उन्हें निर्वासन में भेजकर दण्ड देगा। वे सभी ज़ोर किताब के पहले भाग में बहुत स्पष्ट हैं। कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने यशायाह की बात सुनी और उसका समर्थन किया, हालाँकि आम तौर पर उसके संदेश को अच्छी प्रतिक्रिया नहीं मिली। उसे बताया गया था कि उसके कॉल के समय, जैसा कि यशायाह 6 में दर्ज है, कि उसका संदेश बहरे कानों तक नहीं पड़ेगा। मुझे लगता है कि यह अधिक से अधिक स्पष्ट होता जा रहा था

कि लोग ईश्वर से विमुख हो रहे थे। यशायाह 6:9-10 की भविष्यवाणी पूरी हो रही थी और यह स्पष्ट था कि 6:11-12 में भविष्यवाणी की गई निर्वासन अनिवार्य रूप से आएगी।

हिजकिय्याह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र मनश्शे राजा बना। मनश्शे के शासन के तहत राष्ट्र भयानक धर्मत्याग में गिर गया। 2 राजा 21 मनश्शे के समय की बुराई का वर्णन करता है, जो दक्षिणी राज्य के राजाओं में सबसे दुष्ट था। यहूदी परंपरा के अनुसार यशायाह को मनश्शे के शासन के दौरान टुकड़ों में काट दिया गया था। इब्रानियों के ग्यारहवें अध्याय में टुकड़े-टुकड़े किये जाने के बारे में एक कथन है और कुछ लोग सोचते हैं कि यह यशायाह की ओर संकेत है जो एक पेड़ के खोखले में मनश्शे के एजेंटों से भाग रहा था। पेड़ को काट दिया गया और परिणामस्वरूप, वह टुकड़े-टुकड़े हो गया। अब यह अपोक्रिफ़ल हो सकता है, लेकिन यह स्पष्ट है कि यशायाह अभी भी मनश्शे के समय में रहता था, भले ही, यदि आप पुस्तक के शीर्षक को देखें, तो यह यशायाह 1:1 में कहता है, "शासनकाल के दौरान यशायाह का दर्शन उज्जिय्याह, योताम, आहाज और हिजकिय्याह।" इसमें मनश्शे का उल्लेख नहीं है।

लेकिन यदि आप उन ऐतिहासिक आख्यानो में से एक में यशायाह 37:38 को देखें, तो आप पढ़ते हैं, "एक दिन जब वह अपने देवता निस्रोक के मंदिर में पूजा कर रहा था। [यह अश्शूर का राजा सन्हेरीब है], उसके पुत्रों अद्रम्मेलेक और शरेजेर ने उसे तलवार से मार डाला, और वे अरारात देश में भाग गए। और उसका पुत्र एशर्हद्दोन उसके स्थान पर राजा हुआ।" एशरहादोन ने 681 ईसा पूर्व में शासन करना शुरू किया मनश्शे ने 687 ईसा पूर्व में शासन करना शुरू किया इसलिए 681 में, मनश्शे पहले से ही सिंहासन पर था। इसलिए यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि यशायाह का मंत्रालय मनश्शे के काल तक बढ़ा। अब मनश्शे का उल्लेख शीर्षक में क्यों नहीं किया गया? कुछ लोग सोचते हैं कि यशायाह मनश्शे के समय में इसराइल के अधिक ईश्वरीय अवशेष के साथ एक सार्वजनिक मंत्रालय से अधिक निजी प्रकार के मंत्रालय में बदल गया जब सब कुछ इतना खराब था और पुस्तक का दूसरा भाग उसी अवधि से आता है।

यहाँ हमारे हैंडआउट पर वापस आने के लिए, जब मनश्शे राजा बन गया, तो यहूदा प्रभु से दूर हो गया। इसलिए अच्छे राजा हिजकिय्याह की मृत्यु के बाद यशायाह को यह स्पष्ट हो गया होगा कि संपूर्ण राष्ट्र पश्चाताप नहीं करेगा। निर्वासन अपरिहार्य था. यह ईश्वर के सच्चे लोगों, ईश्वरीय अवशेषों

के लिए भी स्पष्ट होता, और उन परिस्थितियों में फटकार और निंदा के इस संदेश को जारी रखने की आवश्यकता नहीं होती। एक नई जरूरत थी। नई आवश्यकता परमेश्वर के सच्चे लोगों के लिए सांत्वना और आशा के शब्द लाने की थी, जो यशायाह का अनुसरण कर रहे थे, लोगों का वह छोटा सा अल्पसंख्यक वर्ग जो परमेश्वर के सच्चे अनुयायी थे। जैसा कि उन लोगों ने देखा कि न्याय और निर्वासन आ रहा था और यशायाह की तरह अपरिहार्य था, मुझे ऐसा लगता है, आराम और आशा के संदेश की प्रासंगिकता है। हां, तुम निर्वासन में जाओगे, लेकिन निर्वासन हमेशा के लिए नहीं रहेगा। आप वापस लौट सकेंगे। इसलिए यह संदेश कि ईश्वर अपने लोगों को मुक्ति दिलाने जा रहा है, यशायाह के समय के दौरान भी ईश्वर के सच्चे लोगों के लिए एक सांत्वना होगी, साथ ही उन लोगों के लिए भी सांत्वना होगी जो बाद में उस निर्वासन का अनुभव करेंगे और जानेंगे कि ईश्वर ने उन्हें नहीं छोड़ा है।

मैं कह सकता हूं कि यशायाह के जीवनकाल के दौरान उत्तरी साम्राज्य अश्शूरियों के हाथों निर्वासन में चला गया था। उज्जिय्याह का शासनकाल 729 से 715 तक था। उत्तरी राज्य 721 में अश्शूरियों के हाथों गिर गया, इसलिए यह यशायाह के जीवनकाल के दौरान था। इसलिए यहूदा के लोगों को निर्वासन के बारे में पता चला। वे जानते थे कि उन पर भी यही फैसला सुनाया गया है। यह दिलचस्प है कि सन्हेरीब के इतिहास में वह न केवल लोगों को उत्तरी राज्य से निर्वासन में ले जाने का दावा करता है, बल्कि यहूदा की भूमि से भी बंदी बनाने का दावा करता है। इसलिए, यदि आप सन्हेरीब के इतिहास को स्वीकार करते हैं, तो यहूदा के लोग भी थे, जो यशायाह के जीवनकाल के दौरान निर्वासन में चले गए थे। इसलिए मुझे लगता है कि संदेश की उस समय के लिए प्रासंगिकता है। निर्वासन अंत नहीं है। भगवान अभी भी अपने लोगों के साथ हैं। आगे अभी भी भविष्य है। वे वनवास से लौटेंगे। पृष्ठ नौ के शीर्ष पर जाएं: इस प्रकार, यह स्वीकार करते हुए कि यशायाह 40-66 की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पहले से ही निर्वासन में रहने वाले लोगों की है, जिनके शहर नष्ट हो गए हैं और मंदिर खंडहर हो गए हैं, मुझे कोई कारण नहीं दिखता कि यह परिच्छेद क्यों है शायद यशायाह ने बेबीलोन की निर्वासन से एक सदी पहले नहीं लिखा होगा। ऐसा कोई कारण नहीं है कि यह उनके अपने समकालीनों के लिए महत्वपूर्ण न हो।

सी। सारांश निष्कर्ष तो मुझे लगता है कि यह निष्कर्ष निकालने के लिए ये तीन मुख्य तर्क हैं कि यशायाह का दूसरा भाग यशायाह भविष्यवक्ता द्वारा नहीं लिखा गया था। अवधारणाओं और विचारों में अंतर, भाषा और शैली में अंतर, या ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में अंतर - मुझे नहीं लगता कि इनमें से कोई भी तर्क निर्णायक है कि अध्याय 40-66 लिखने के लिए कोई दूसरा यशायाह होना चाहिए। इसलिए वे प्राथमिक तर्क लेखकत्व की बहुलता को साबित करने में विफल रहते हैं।

घ) यशायाह की एकता के लिए कुछ अंतिम तर्क - एनटी उद्धरण मुझे लगता है, इसके विपरीत, यशायाह के लेखकत्व को बनाए रखने के लिए कुछ मजबूत कारण हैं। सबसे पहले, इस बात का कोई पांडुलिपि प्रमाण नहीं है कि यह पुस्तक अपने वर्तमान एकीकृत स्वरूप के अलावा किसी अन्य रूप में अस्तित्व में थी। बेशक, दिलचस्प बात यह है कि मृत सागर स्क्रॉल के बीच हमारे पास ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी की यशायाह की पूरी किताब की एक पांडुलिपि है, जो इसकी एकता का गवाह है। वह काफ़ी पुराना है। सेप्टुआजेंट भी उन्हें अलग नहीं करता है, जो 250-200 ईसा पूर्व से आया था, इसलिए, कुछ बहुत प्रारंभिक पांडुलिपि साक्ष्य एकता का समर्थन करते हैं।

दूसरी बात, और मुझे लगता है कि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपके पास इसाईयन लेखकत्व का नया नियम का गवाह है। नए नियम में यशायाह को लगभग 21 बार उद्धृत किया गया है। वे उद्धरण पुस्तक के दोनों भागों अध्याय 1, 6, 8, 9, 10, 11, 29, 40, 42, 53, 61, और 65 से लिए गए हैं। विशेष रूप से यूहन्ना 12:38-40 पर ध्यान दें जहाँ आप पढ़ते हैं "यह यशायाह भविष्यद्वक्ता का वचन पूरा करना था। 'हे प्रभु, हमारे संदेश पर किसने विश्वास किया है और प्रभु का भुजबल किस पर प्रकट हुआ है?' यह यशायाह 53:1 से है जो पुस्तक का दूसरा भाग है। "इस कारण से वे विश्वास नहीं कर सके क्योंकि जैसा कि यशायाह ने कहीं और कहा था, 'उसने उनकी आंखें अंधी और उनके हृदयों को मुर्दा कर दिया है, जिससे वे न आंखों से देख सकते हैं, न हृदय से समझ सकते हैं, अन्यथा मैं उन्हें चंगा कर दूंगा।'" यह यशायाह 6 से है। :10. तो वहीं उस एक उद्धरण में आपके पास पुस्तक के दूसरे भाग से एक उद्धरण और पुस्तक के पहले भाग से एक उद्धरण है। कहा जाता है कि ये दोनों यशायाह भविष्यवक्ता की ओर से हैं। श्लोक 41 में, जॉन कहते हैं कि यशायाह ने ऐसा इसलिए कहा, "क्योंकि उसने यीशु की महिमा देखी और उसके बारे

में बात की।" ल्यूक 4:17 में आपने पढ़ा कि भविष्यवक्ता यशायाह की पुस्तक यीशु को दी गई थी और उसने अध्याय 61 से पढ़ा था और उसे वहां उद्धृत किया गया है। वह किताब के दूसरे भाग में है। प्रेरितों के काम 8:30 में इथियोपिया का खोजी यशायाह भविष्यवक्ता को पढ़ रहा था और वह जो पढ़ रहा है वह अध्याय 53 है। तो ये उस तरह के नए नियम के उद्धरण के कई उदाहरण हैं जो स्पष्ट रूप से पुस्तक के दूसरे भाग से यशायाह भविष्यवक्ता को सामग्री देते हैं।

ई) लॉन्गमैन और डिलार्ड, ओटी का परिचय अभी मैंने कक्षा से पहले रे डिलार्ड और ट्रेम्पर लॉन्गमैन द्वारा लिखित *द इंट्रोडक्शन टू द ओल्ड टेस्टामेंट से पृष्ठ 274-275 का एक एकल पृष्ठ हैंडआउट वितरित किया है*, जो कि हाल ही में ओल्ड टेस्टामेंट का परिचय है। दो बहुत सक्षम इंगील विद्वान । मैं इसे आपके साथ देखना चाहता हूं क्योंकि वे इस प्रश्न के साथ क्या करते हैं। शीर्ष पृष्ठ 274 पर पहले पैराग्राफ के मध्य के बारे में लॉन्गमैन और डिलार्ड कहते हैं, "कुछ मामलों में यशायाह की एकता के बारे में बहस एक महत्वपूर्ण अंतर के साथ पूरी हो गई है:" (यह वही है जिसका पहले उल्लेख किया गया था) "बल्कि" किसी एक लेखक के हाथ से उत्पन्न एकता की तुलना में, पुस्तक को अब व्यापक रूप से एक पुनर्मूल्यांकन एकता के रूप में देखा जाता है। यशायाह 40-66 को एक स्वतंत्र कार्य के रूप में देखने के बजाय जो गलती से आठवीं शताब्दी के भविष्यवक्ता के काम में जुड़ गया, कुछ विद्वान अब तर्क देते हैं कि यशायाह 40-66 पुस्तक के पहले भाग के अलावा कभी अस्तित्व में नहीं था और इसकी रचना (किस माध्यम से) की गई थी पहले की सामग्री के आलोक में यह अभी भी एक जटिल सुधारात्मक प्रक्रिया हो सकती है।" तो आप आज के साहित्य को देखें, आपको अक्सर एक किताब का संदर्भ मिलता है, लेकिन एक लेखक का संदर्भ नहीं मिलता है। जिस रूप में हम इसे पाते हैं उसमें पुस्तक के अनेक लेखकत्व और कभी-कभी अत्यधिक जटिल प्रक्रिया होती है। इसलिए पुस्तक में एकता तो है लेकिन लेखकत्व की एकता नहीं है।

डिलार्ड और लॉन्गमैन के अगले भाग को यहां "एक आकलन" कहा जाता है और यहीं पर वे स्थिति और समस्या की वर्तमान स्थिति का आकलन करते हैं, "कई मामलों में यशायाह के बारे में समकालीन आलोचनात्मक सोच उन ज्यादातियों से उबर गई है जो अठारहवीं सदी के अंत से लेकर

शुरुआत तक विद्वता की विशेषता थी। उन्नीसवीं सदी. आलोचनात्मक विद्वानों के बीच आम सहमति उस बात को स्वीकार करने की दिशा में आगे बढ़ी है जो रूढ़िवादियों को प्रिय थी: कि यशायाह एक बेतरतीब दुर्घटना और आंतरिक रूप से विरोधाभासी का परिणाम नहीं है, बल्कि यह कि पुस्तक पूरी तरह से चीजों और रूपांकनों की एकता को दर्शाती है, ”- मार्गालियोथ इसी बारे में बात कर रहा था। पुस्तक के दोनों भागों में ये विषय और भाषा सुसंगत हैं। "ज्यादातर बहस का रुख स्रोतों और सेटिंग्स को पुनर्प्राप्त करने के लिए पाठ को विच्छेदित करने पर ध्यान केंद्रित करने से हटकर, पाठ की सुसंगतता और एकता को उजागर करने के प्रयासों पर केंद्रित हो गया है।"

यह अपने अंतिम रूप में पाठ के डायक्रोनिक से समकालिक प्रकार के विश्लेषण में बदलाव को दर्शाता है। अब पिछले लगभग 20 वर्षों में ध्यान इस बात पर है कि वे पाठ के अंतिम रूप को देखें, न कि इस बात पर कि यह उस अंतिम रूप तक कैसे पहुंचा। इसके बजाय वे समकालिक रूप से उस चीज़ को देखते हैं जो पाठ को एक साथ रखती है। सामान्य विषयों और शब्दावली के आधार पर लेखकत्व की एकता के लिए रूढ़िवादियों के तर्कों को अब एक बड़े हिस्से में ले लिया गया है और उन तर्कों की सेवा में लगाया गया है जो इसकी एकता को साबित नहीं करते हैं बल्कि पुस्तक में एक प्रतिक्रियात्मक एकता साबित करते हैं। मैं उस अन्य हैंडआउट के साथ बाद में उस पर वापस आना चाहता हूं लेकिन चलिए आगे बढ़ते हैं।

“निश्चित रूप से, आलोचनात्मक और रूढ़िवादी सोच लेखकत्व के मुद्दे पर विभाजित रहती है। यद्यपि यशायाह की समग्र एकता के बारे में आम सहमति बढ़ रही है, आलोचनात्मक विद्वता के लिए यह एक एकल लेखक से प्राप्त एकता के बजाय सुधार के इतिहास के माध्यम से बनी एकता है। अगले दो पैराग्राफों में वह रूढ़िवादी दृष्टिकोण और फिर आलोचनात्मक दृष्टिकोण पर चर्चा करते हैं। उनका कहना है कि रूढ़िवादी सोच दो चीजों के धार्मिक विश्वास पर आधारित है। सबसे पहले, भविष्यसूचक रहस्योद्घाटन की वास्तविकता के बारे में कि ईश्वर की आत्मा ने प्राचीन लेखकों को भविष्य पर एक नज़र डाली थी। दूसरे, समग्र रूप से पवित्रशास्त्र की अखंडता और विश्वसनीयता के बारे में, अर्थात्, कथनों और उपशीर्षकों और नए नियम के उद्धरणों को स्वीकृति की आवश्यकता होती है।

1) ईश्वर और भविष्य की भविष्यवाणी यशायाह 40-66 का निरंतर विवाद यह है कि यशायाह भविष्य की घोषणा करता है और ईश्वर उसे पूरा करने में सक्षम है। दूसरे शब्दों में, साइरस का संदर्भ किसी भविष्य के शासक के लिए एक प्रकार का पृथक संदर्भ नहीं है, बल्कि यह उस निरंतर तर्क में एकीकृत है जो पुस्तक में चलता है, कि ईश्वर भविष्य की भविष्यवाणी करने में सक्षम है। एक उदाहरण आने वाले मसीहा का सेवक विषय है। यह एक और दीर्घकालिक भविष्यवाणी है जो नौकर अनुक्रम को कायम रखती है जो साइरस भविष्यवाणी की तुलना में अधिक उल्लेखनीय है, कुछ लोग कह सकते हैं। “पहले से ही यशायाह 1-39 में, निर्वासन और पुनर्स्थापना का अनुमान उन अंशों में लगाया गया है जिन्हें लगभग सार्वभौमिक रूप से आम तौर पर इसाई माना जाता है। अपने आह्वान में भविष्यवक्ता उस दिन की भविष्यवाणी करता है जब यरूशलेम नष्ट हो जाएगा और आबादी से वंचित हो जाएगा और उसने प्रत्याशित बहाली के आलोक में एक बेटे का नाम रखा ('शियर-जशुब' का अर्थ है 'एक अवशेष वापस आएगा')। यशायाह 1-39 में भविष्यवक्ता द्वारा अवशेष रूपांकन का व्यापक उपयोग बेबीलोन से आने वाले खतरे की आशंका व्यक्त करता है। भविष्यवक्ता ने अपनी समझ को स्पष्ट कर दिया कि उनकी भविष्यवाणी का पहलू तत्काल नहीं, बल्कि दूर के भविष्य से संबंधित था। इसलिए वह रूढ़िवादी दृष्टिकोण के बारे में ये बातें कहते हैं।

"आलोचनात्मक राय विशेष रूप से इस तथ्य पर आधारित है कि यशायाह 40-66 आठवीं शताब्दी में यरूशलेम में यशायाह के अलावा किसी अन्य ऐतिहासिक सेटिंग का अनुमान लगाता है।" यह तीसरा तर्क है जिसके बारे में हमने "ऐतिहासिक पृष्ठभूमि" शीर्षक के अंतर्गत बात की है। अब वह कहते हैं कि दोनों स्थितियों की जांच की आवश्यकता है और यही वह पृष्ठ 275 पर करते हैं, "एक ओर, यदि कोई एक संप्रभु ईश्वर और भविष्यसूचक प्रेरणा की वास्तविकता को स्वीकार करता है, तो वह यह नहीं कह सकता, 'ईश्वर स्वयं को इस तरह से यशायाह के सामने प्रकट नहीं कर सकता था।'। ऐतिहासिक आलोचना में इतना भोला विश्वास हर तरह से उतना ही धार्मिक बयान है जितना कि उन्होंने ऐसा किया था।

2) Deut से तुलना. 34 फिर भी, दूसरी ओर, जब आलोचनात्मक विद्वान यशायाह 40-66 की सेटिंग से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इन अध्यायों के लेखक बेबीलोन के निर्वासन में काफी देर तक रहे,

तो यह सैद्धांतिक रूप से एक अलग तर्क नहीं है," (यह मूल है) इस पुस्तक में जो स्थिति चल रही है वह सैद्धांतिक रूप से एक अलग तर्क नहीं है) "उस तर्क से जो रूढ़िवादी बनाने के लिए तैयार हैं, उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 34 के बारे में।" व्यवस्थाविवरण 34 मूसा की मृत्यु के बारे में एक अंश है। देखें कि उन्होंने यह तर्क क्यों दिया, "मूसा और व्यवस्थाविवरण के बीच ऐतिहासिक संबंध के बारे में कोई भी निष्कर्ष निकाले, यह स्पष्ट है कि मूसा ने अपनी मृत्यु का वृत्तांत नहीं लिखा (व्यवस्थाविवरण 34:1-8); जिस व्यक्ति ने इस पुस्तक का यह अंतिम भाग लिखा वह ऐसे समय में रहता था जब बहुत से भविष्यवक्ता आए और चले गए, लेकिन मूसा जैसा कोई नहीं था। कहने का तात्पर्य यह है कि इस अध्याय द्वारा अनुमानित सेटिंग (मूसा की मृत्यु के बाद का समय) मूसा द्वारा इसे लिखे जाने से रोकती है। यद्यपि नया नियम व्यवस्थाविवरण का हवाला देता है और इसका श्रेय मूसा को देता है, कोई भी गंभीरता से यह तर्क नहीं देगा कि इसमें व्यवस्थाविवरण 34 भी शामिल है। यह स्वीकार करते हुए कि व्यवस्थाविवरण 34 की स्थापना के लिए बाद में रहने वाले लेखक की आवश्यकता होती है, मूसा, जो लेखक पारंपरिक रूप से पुस्तक के लिए नियुक्त किया गया है, भौतिक रूप से भिन्न नहीं है। यह पहचानने से कि यशायाह 40-66 की पृष्ठभूमि निर्वासन के दौरान जीवित एक लेखक का अनुमान लगाती है। अब आप देखिए कि तर्क किस प्रकार दिया जाता है। व्यवस्थाविवरण का श्रेय आम तौर पर मूसा को दिया जाता है, लेकिन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण यह बहुत स्पष्ट है कि मूसा ने अध्याय 34 नहीं लिखा है। यशायाह की पुस्तक का श्रेय आम तौर पर यशायाह को दिया जाता है, लेकिन अध्याय 40-66 के साथ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण, यह जरूरी नहीं है कि यशायाह ने ही लिखा हो। उन्हें लिखा. उनका तर्क है कि व्यवस्थाविवरण 34 और यशायाह 40-66 के बीच एक समानता है।

3) कॉन्ट्रा ड्यूट। 34 तुलना

मुझे ऐसा लगता है कि वह सादृश्य संदिग्ध है। मैं यह मानने को तैयार नहीं हूँ कि उस तर्क के आधार पर यशायाह 40-66 का रचयिता यशायाह के अलावा किसी और का सिद्ध होता है। मैं बस कुछ बिंदु बताऊंगा। व्यवस्थाविवरण 34 बारह श्लोक है। यह ऐतिहासिक सामग्री है. यह वास्तव में पुस्तक को इस अर्थ में निष्कर्ष देता है कि 34 तक जो ले जा रहा है वह मूसा और जोशुआ

के बीच नेतृत्व का परिवर्तन है - मूसा और जोशुआ के साथ परिवर्तन वास्तव में मूसा की मृत्यु के साथ प्रभावित होता है। यदि आप यहोशू की ओर बढ़ते हैं, तो यहोशू ने इस्राएल के नेता के रूप में मूसा का स्थान ले लिया है। मुझे ऐसा लगता है कि व्यवस्थाविवरण 34 और यशायाह 40-66 के बीच मात्रात्मक और गुणात्मक अंतर है। जैसा कि मैंने कहा, व्यवस्थाविवरण बारह छंद और एक ऐतिहासिक कथा है। यशायाह 40-66 अत्यधिक महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण भविष्यसूचक प्रवचन के 27 अध्याय हैं। डिलार्ड और लॉन्गमैन का कहना है कि नया नियम व्यवस्थाविवरण का हवाला देता है और इसका श्रेय मूसा को देता है। हाँ, लेकिन यह अध्याय 34 से कुछ भी उद्धृत नहीं करता है और इसका श्रेय मूसा को देता है। दूसरे शब्दों में, यह काफी अंतर है। जब हमने जॉन 12:38-40 में देखा जहां पुस्तक का दूसरा भाग उद्धृत किया गया है और इसका श्रेय यशायाह को दिया गया है, तो व्यवस्थाविवरण के लिए इसकी तुलना कुछ भी नहीं है। हमारे पास ऐसे सन्दर्भ हैं जो व्यवस्थाविवरण का श्रेय मूसा को देते हैं जो महत्वपूर्ण हैं क्योंकि आज व्यवस्थाविवरण पर भी सवाल उठाए जाते हैं, लेकिन नए नियम में अध्याय 34 से कुछ भी उद्धृत नहीं किया गया है। इसलिए, मुझे इतना यकीन नहीं है कि वह सादृश्य वास्तव में इस संभावना को साबित करने के लिए पर्याप्त है कि यशायाह 40-66 यशायाह भविष्यवक्ता से नहीं है।

4) लॉन्गमैन/डिलार्ड - ईसा में यशायाह का उल्लेख नहीं है। 40-66 ध्यान दें कि वे आगे क्या कहते हैं, “पुस्तक के दूसरे भाग में यशायाह का उल्लेख नहीं है। हालाँकि, भविष्यसूचक प्रेरणा की वास्तविकता को समाप्त नहीं किया गया है: बाद में निर्वासन में रहने वाले एक लेखक ने दैवीय प्रेरणा के माध्यम से पूर्वाभास किया कि भगवान साइरस के माध्यम से क्या करने वाले थे, जैसे यशायाह ने देखा कि भगवान जल्द ही टिग्लैथ-पाइल्सर III के साथ क्या करेंगे। इस बाद के लेखक ने यशायाह की निर्वासन की भविष्यवाणियों और अवशेष घटनाओं को देखा जो उसके अपने समय में घटित हो रही थीं, और उसने यशायाह के उपदेश को अपने साथी निर्वासितों के लिए विकसित करने और लागू करने के लिए लिखा। हालाँकि इस महान भविष्यवक्ता की गुमनामी एक समस्या है, यह ऐतिहासिक पुस्तकों या इब्रानियों की किताब की गुमनामी से अधिक असामान्य नहीं है। मैं कहूंगा कि इसकी गुमनामी एक समस्या है और विशेष रूप से इसलिए, क्योंकि ऐतिहासिक पुस्तकों

के विपरीत, आपके पास यशायाह 1:1 जैसा कोई श्लोक नहीं है। यशायाह 1:1 पुस्तक का परिचय देता है, "वह दर्शन जो आमोस के पुत्र यशायाह ने देखा।" ऐसा लगता है कि यह शीर्षक पूरी किताब का शीर्षक है जिसका श्रेय यशायाह को दिया गया है। हमारे पास ऐतिहासिक किताबों में ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं है। तो अंतिम पैराग्राफ कहता है, "इसे धार्मिक *शिबोलेथ* या रूढ़िवाद के लिए परीक्षण नहीं बनाया जाना चाहिए। कुछ मामलों में बहस के अंतिम परिणाम कुछ हद तक अस्पष्ट हैं, चाहे आठवीं शताब्दी में यशायाह द्वारा लिखा गया हो या बाद के समय में उनकी लिखित अंतर्दृष्टि को लागू करने वाले अन्य लोगों द्वारा, यशायाह 40-66, स्पष्ट रूप से बड़े पैमाने पर निर्वासित समुदाय की जरूरतों को संबोधित किया गया था।।"

5) यशायाह पर रिचर्ड शुल्स की प्रतिक्रिया वह दूसरा हैंडआउट जो मैंने आपको दिया था, वह 2004 में प्रकाशित पुस्तक *इवेंजेलिकल्स एंड स्क्रिप्चर से लिया गया एक लेख* है, और जो लेख मैंने आपको वहां दिया है वह रिचर्ड शुल्स का शीर्षक है, "वहां कितने यशायाह थे" और इससे क्या फर्क पड़ता है? हालिया इंजील विद्वता में भविष्यसूचक प्रेरणा।" मुझे लगता है यह एक अच्छा लेख है। मैं आपका ध्यान कुछ पत्रों की ओर दिलाना चाहता हूँ। ध्यान दें कि वह पृष्ठ के निचले भाग 158 पर क्या कहता है, जहां वह बाइबिल के पाठ में परिवर्धन और संशोधन के लिए तैयार इंजील विद्वानों के बारे में बात करता है। वह कहते हैं, "फिर, पवित्रशास्त्र के बारे में अपने इंजील दृष्टिकोण को बनाए रखते हुए, वे बस प्रेरणा के सिद्धांत को उस चीज़ को कवर करने के लिए बढ़ाते हैं जो उन्होंने अभी प्रस्तावित किया है।" दूसरे शब्दों में, वह जो कह रहे हैं वह यह है कि बहुत से इंजील विद्वान कई आलोचनात्मक विद्वानों की कार्यप्रणाली को अपना लेते हैं, लेकिन फिर प्रेरणा के बारे में अपने दृष्टिकोण को बढ़ाते हुए कहते हैं कि इन सभी संपादकों और बाद के संस्करणों को भी प्रेरणा के सिद्धांत के तहत माना जाता है। "हालांकि, किसी को आश्चर्य होता है कि क्या बाइबिल साहित्य की उत्पत्ति के किसी भी ऐतिहासिक-महत्वपूर्ण सिद्धांत को तब तक ईसाई रूप से स्वीकार्य बनाया जा सकता है जब तक कोई इस प्रक्रिया में पारंपरिक लेखक की 'पर्याप्त भागीदारी' की पुष्टि करता है।"

वह आगे कहते हैं, "मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि बौद्धिक ईमानदारी और पाठ्य साक्ष्य यह मांग करते हैं कि इंजीलवादी इस बात को स्वीकार करें कि अधिकांश पुराने नियम के विद्वान

आज यशायाह की पुस्तक के जटिल रचनात्मक इतिहास के बारे में क्या दावा करते हैं।"

पृष्ठ 161 पर पृष्ठ के मध्य में वह कहते हैं, "मुद्दा यह है कि क्या हम वैध रूप से प्रेरित लेखकों या संपादकों की एक श्रृंखला प्रस्तुत कर सकते हैं जब पाठ में कई भविष्यवक्ताओं की भागीदारी को स्वीकार नहीं किया गया है और जब ऐसा प्रस्तुत करने के कारणों में से एक है एक जटिल रचना प्रक्रिया यह दावा है कि ईश्वर की आत्मा यशायाह की पुस्तक में पहचानी गई सामग्री की विविधता को केवल एक व्यक्ति के सामने प्रकट नहीं कर सकती (या कम से कम शायद नहीं) / अच्छा प्रश्न।

पृष्ठ 162 के दूसरे पैराग्राफ पर जाएँ, "[येल के] बच्चे रूढ़िवादियों पर यशायाह को 'भविष्य के दिव्यदर्शी' में बदलने का आरोप लगाते हैं," उस विशेष रूढ़िवादी शैली में। और अगले पैराग्राफ में शुल्टज़ कहते हैं, "साइरस का परेशानी भरा संदर्भ शायद एक प्राथमिक कारण है कि कई इंजील विद्वानों ने एक-लेखक की व्याख्या को छोड़ दिया है, या कम से कम सवाल उठा रहे हैं। हालाँकि, यशायाह 41-42 में, साइरस की प्रस्तुति को नौकर की प्रस्तुति के साथ जोड़ा गया है, दोनों चित्र समान अभिव्यक्तियों में उपयोग किए गए हैं। यदि साइरस पहले से ही घटनास्थल पर है, तो क्या नौकर को भी कथित भविष्यवक्ता दूसरे यशायाह का समकालीन होना चाहिए? कुछ पंक्तियाँ नीचे लिखें, "हालाँकि, यदि आध्यात्मिक उद्धारकर्ता, यीशु के आने के समय, भविष्य में सात शताब्दियों में एक भविष्यवक्ता के लिए बोलना संभव था, तो क्या यरूशलेम के यशायाह के साइरस के बारे में बोलने की कल्पना करना समस्याग्रस्त है, उनका राजनीतिक अग्रदूत, भविष्य में केवल दो शताब्दियाँ?"

6) लॉन्गमैन/डिलार्ड को वन्नॉय की प्रतिक्रिया अब अंतिम पृष्ठ के दूसरे पैराग्राफ पृष्ठ 170 पर जाएँ, जहां हम अपने प्रारंभिक प्रश्न पर लौट रहे हैं, "वहां कितने यशायाह थे और इससे क्या फर्क पड़ता है।" "डिलार्ड और लॉन्गमैन इस बात पर जोर देते हैं कि 'कुछ मामलों में बहस के अंतिम परिणाम कुछ विवादास्पद हैं।' इसके विपरीत, मैंने यह प्रदर्शित करने का प्रयास किया है कि भविष्यसूचक पुस्तकों में भविष्यसूचक प्रेरणा, भविष्यसूचक भविष्यवाणी, अलंकारिक सुसंगतता और धर्मशास्त्रीय विकास की प्रकृति के संबंध में ऐतिहासिक-महत्वपूर्ण निष्कर्षों को अपनाने के महत्वपूर्ण परिणाम हैं - ऐसे परिणाम जिन्हें नजरअंदाज कर दिया जाता है, कम महत्व दिया जाता है या अस्वीकार कर

दिया जाता है। हालिया इंजील (और गैर-इंजील) साहित्य जिसका हमने सर्वेक्षण किया है। तो यह एक बहस है जो चल रही है। आपको इस पर आगे पढ़ने में रुचि हो सकती है, लेकिन हम वह पूरा लेख नहीं पढ़ रहे हैं; मैंने अभी कुछ चीजों पर प्रकाश डाला है।

2. डैनियल - मुख्यधारा के आलोचनात्मक विद्वानों के बीच एक आम सहमति है कि डैनियल की काल्पनिक पुस्तक

नंबर 2., "मुख्यधारा के आलोचनात्मक विद्वानों के बीच आम सहमति है कि डैनियल की किताब काल्पनिक है।" उनका मानना है कि यह तब लिखा गया था जब इज़राइल 165 ईसा पूर्व से कुछ समय पहले एंटीओकस एपिफेन्स के तहत पीड़ित था। हालांकि यह किताब 539 में साइरस द्वारा बेबीलोन पर कब्ज़ा करने से पहले और उसके तुरंत बाद इस भविष्यवाणी के दाता के रूप में डैनियल का प्रतिनिधित्व करती है। तो यह मुद्दा है। हम डैनियल की पुस्तक की भविष्यवाणियों का श्रेय किसको दें - स्वयं डैनियल को लगभग 539, या ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी, लगभग 165 ईसा पूर्व के दौरान मैकाबीन काल में रहने वाले किसी अज्ञात व्यक्ति को।

मेरा मानना है कि मुख्यधारा के आलोचनात्मक विद्वानों के लंबे निष्कर्ष के लिए यहां तीन प्राथमिक कारण हैं। एक वह है जिसे मैं मूलभूत अंतर्निहित मुद्दा कहता हूं; यह व्यापक रूप से फैली हुई धारणा है कि आम तौर पर पूर्वानुमानित भविष्यवाणी नहीं होती है। दूसरे, कहा जाता है कि पुस्तक में कथित ऐतिहासिक त्रुटियां वर्णित घटनाओं के काफी समय बाद इसकी उत्पत्ति को दर्शाती हैं, जब जो कोई भी इसे लिख रहा था उसे या तो पता नहीं था या वह भूल गया था कि वास्तव में ऐतिहासिक रूप से क्या हुआ था। तीसरे कथित देर से भाषाई संकेतक हैं।

एक। "भविष्यवाणी करने वाली भविष्यवाणी नहीं होती है।"

तो आइए उन तीन तर्कों पर नजर डालते हैं। धारणा ए. कि "भविष्यवाणी भविष्यवाणी नहीं होती है।" यह मूलतः एक दार्शनिक विश्वदृष्टि मुद्दा है। यदि ब्रह्माण्ड कारण और प्रभाव संबंधों का एक बंद सातत्य है जिसमें दैवीय हस्तक्षेप के लिए कोई जगह नहीं है, तो निस्संदेह आपके पास दैवीय रहस्योद्घाटन नहीं है। डैनियल के लिए उन घटनाओं का वर्णन करना असंभव होगा जो

हमारे द्वारा बताए गए समय के इतने लंबे समय बाद घटित हुई। यदि आप यह निष्कर्ष निकालते हैं कि उस प्रकार की वास्तविक भविष्यवाणी न तो होती है और न ही हो सकती है, तो तुरंत एक प्रश्न उठता है जो डैनियल की पुस्तक में प्रमुखता के कारण काफी महत्वपूर्ण है।

1) डैनियल 2 और 7 और महत्वपूर्ण सिद्धांत उदाहरण के लिए, क्या डैनियल अध्याय 2 और अध्याय 7 में साम्राज्यों का एक क्रम है? डैनियल 2 में आपको उस छवि का दर्शन मिलता है जिसमें सिर सोने का, छाती और भुजाएं चांदी की, पेट और जांघें कांस्य की और टांगें और पैर लोहे के हैं, जो चार साम्राज्यों के उत्तराधिकार का चित्रण कर रहे थे जो सत्ता में आने वाले थे। निकटपूर्व। साम्राज्यों का वही क्रम डैनियल 7 में पाया जाता है लेकिन वहां चार अलग-अलग प्रकार के जानवरों को दर्शाया गया है। अब अध्याय 7 में सोने का सिर, छाती और भुजाएं, पेट और जांघें और पैर के बजाय आपके पास एक शेर, एक भालू, एक तेंदुआ और कुछ अनाम भयानक जानवर हैं। उन जानवरों के प्रतीकवाद की पारंपरिक व्याख्या, साथ ही छवि के वे हिस्से जो छवि में सोने के सिर हैं, बेबीलोनियन साम्राज्य है। स्तन और भुजाएँ मादी-फ़ारसी साम्राज्य हैं। पेट और जांघें यूनानी साम्राज्य, सिकंदर महान और उसके उत्तराधिकारी हैं। पैर और पैर रोमन साम्राज्य हैं। अब वह क्रम मुख्यधारा के आलोचनात्मक दृष्टिकोण के साथ फिट नहीं बैठता है क्योंकि रोमन साम्राज्य ऐतिहासिक रूप से एंटीओकस एपिफेनीज़ के समय तक नहीं उभरा था जो ग्रीक काल का हिस्सा था। बदले में इसका मतलब यह है कि मुख्यधारा के आलोचनात्मक विद्वान, जो एंटीओकस एपिफेन्स के समय में किताब की तारीख बताते हैं, उन्हें उन साम्राज्यों का उत्तराधिकार ढूंढना होगा जो उस समय से पहले मौजूद थे जब किताब लिखी जाने का आरोप लगाया गया था या आप भविष्यवाणी पर वापस आ गए हैं। यदि आपके पास रोमन साम्राज्य है, तो वह एंटीओकस के समय में भी अस्तित्व में नहीं था।

इसलिए, आलोचनात्मक विद्वानों ने आम तौर पर जिस प्रस्ताव को स्वीकार किया वह सोने का सिर बेबीलोनियन साम्राज्य है। स्तन और भुजाएँ एक अपोकलिफ़ल मेडियन साम्राज्य हैं - मैं "एपोकलिफ़ल" कहता हूँ क्योंकि बेबीलोनियन और फ़ारसी साम्राज्यों के बीच स्वतंत्र अस्तित्व में कोई मेडियन साम्राज्य नहीं था। फारसियों द्वारा बेबीलोन पर विजय प्राप्त करने से पहले मीडिया फारस

का हिस्सा बन गया था, इसलिए जिन आलोचनात्मक विद्वानों को चार राज्यों का क्रम मिलता है, उन्हें बेबीलोनियन और फारसी के बीच इस मध्य साम्राज्य का निर्माण करना होगा, जबकि यह ऐतिहासिक रूप से गलत है। लेकिन तब पेट और जाधें फ़ारसी होनी चाहिए और फिर टाँगें और पाँव यूनानी होने चाहिए ताकि यह उस समय समाप्त हो जाए जब यह कथित तौर पर लिखा गया था।

यदि तब डैनियल की भविष्यवाणियाँ राज्यों के इस विशेष उत्तराधिकार को दर्शाती हैं तो वे ऐतिहासिक रूप से गलत हैं। आलोचनात्मक विद्वानों के लिए यह कोई समस्या नहीं है क्योंकि वे बस दावा करते हैं कि इन भविष्यवाणियों के लेखक सदियों बाद, मैकाबीयन काल के दौरान रहते थे। हो सकता है कि वह इतिहास के पहले पाठ्यक्रम के बारे में भ्रमित हो गया हो और उसने गलती से सोचा हो कि फ़ारसी और बेबीलोनियन काल के बीच मेडियन का एक स्वतंत्र अस्तित्व था। निष्कर्ष यह है, "हम लेखक डैनियल से बेहतर जानते हैं, चाहे वह कोई भी हो, जिसने राज्यों के उस क्रम के बारे में बस गलती की थी।"

2) डैन में ऐतिहासिक त्रुटियों के गंभीर सिद्धांत संबंधी आरोपों का जवाब। 2 और 7 तो आपकी यह धारणा है कि वास्तव में पूर्वानुमानित भविष्यवाणी घटित नहीं होती है। ये ऐतिहासिक त्रुटियाँ, जैसा कि हमने अभी देखा है, प्रमुख कथित ऐतिहासिक त्रुटियों में से एक इस अपोकलिफ़ल मेडियन साम्राज्य का अस्तित्व है, लेकिन उनकी अन्य त्रुटियों में शामिल हैं - मैं यहाँ तीन का उल्लेख करूँगा, जिनमें से कोई भी बहुत महत्वपूर्ण नहीं है: इसके बजाय बेलशेज़र का संदर्भ उस समय नबोनिडस, जब बेबीलोनवासी फारसियों के हाथों गिरे थे (डैनियल 5:30-31) को एक ऐतिहासिक गलती कहा जाता है। "उसी रात बेबीलोनियों का राजा बेलशस्सर मारा गया और 62 वर्ष की आयु में मादी डेरियस ने राज्य पर अधिकार कर लिया।" हम एक मिनट में उस पर वापस आएं, लेकिन अक्सर यह तर्क दिया गया है कि बेलशस्सर शासक नहीं था, यह नबोनिडस था।

दूसरे, डेरियस द मेडे नाम का व्यक्ति उस ऐतिहासिक संदर्भ में कभी अस्तित्व में नहीं था जिसमें उसे डैनियल में रखा गया है। वही आयत डेरियस मादी के राज्य पर कब्ज़ा करने की बात करती है। तीसरा, दानियेल 5:2 और 22 में बेलशस्सर के पिता के रूप में नबूकदनेस्सर के

अभिलेख केवल गलत होंगे क्योंकि बेलशस्सर पुत्र के बजाय पोता होगा। उन सभी आरोपों पर वाजिब प्रतिक्रियाएं आ रही हैं।

ए) नबोनिदास और बेलशस्सर सबसे पहले, बेबीलोन के ऐतिहासिक स्रोतों से पता चलता है कि नबोनिडस ने अपने बेटे का नाम बेलशस्सर सह-शासनकर्ता रखा था, जब वह बेबीलोन से असीरिया और उत्तरी अरब के लिए रवाना हुआ था। दानियेल 5:29 कहता है कि उन्होंने एक होकर शासन किया। यह बहुत संभव है कि नबोनिडस उस रात आसपास नहीं था और बेबीलोनियन से फारसी शासन में संक्रमण के समय उसका सह-शासक बेलशस्सर प्रभारी था।

ख) डेरियस द मेड सेकेंड कौन है, जबकि यह सच है कि डेरियस द मेड का उल्लेख बाइबिल के बाहर नहीं किया गया है और फारस के साइरस के उत्तराधिकार में बेलशस्सर और नबोनिडस के बीच कोई अंतराल नहीं है - यह साइरस ही था जिसने बेबीलोन साम्राज्य पर कब्जा कर लिया था -

इसका मतलब यह नहीं है कि डेनियल गलती पर है। कई उचित सुझाव दिए गए हैं जो डेरियस द मेड की पहचान करने का प्रयास करते हैं। यह संभव है कि यह स्वयं साइरस का दूसरा नाम है, शायद सिंहासन का नाम। 1 इतिहास 5:26 में आपको राजा तिग्लथ-पाइलसर का पुल के रूप में उल्लेख मिलता है। क्या साइरस को डेरियस द मेड के नाम से भी जाना जाता था? यह संभव है। कुछ लोग 6:28 को देखते हैं जहाँ यह कहा गया है, "इस प्रकार दानियेल डेरियस के शासनकाल और फारस के साइरस के शासनकाल के दौरान समृद्ध हुआ" कुछ ने इसका अनुवाद केवल इसे सीमित करने के रूप में किया - यहाँ तक कि पहले साइरस के शासनकाल के दौरान भी। ताकि डेरियस और साइरस एक ही हों। यह संभव है। अन्य लोगों ने सुझाव दिया है कि यह गुबरू नाम का एक अन्य व्यक्ति था, जो कि बेबीलोनियाई ग्रंथों में पाया जाने वाला नाम है जिसे साइरस ने बेबीलोन का गवर्नर नियुक्त किया था। उसका नाम गुबरू था जिसे डेरियस भी कहा जाता था। आप देखते हैं कि यह सच है कि हमारे पास डेरियस द मेडे की पहचान को हल करने के लिए पर्याप्त सबूत नहीं हैं - और हम नहीं करते हैं - मुझे नहीं लगता कि यह निष्कर्ष निकालने का कोई कारण है कि पुस्तक मैकाबीन काल में लिखी गई थी या कि ऐतिहासिक सन्दर्भ में पुस्तक

आवश्यक रूप से त्रुटिपूर्ण है।

ग) नबूकदनेस्सर पिता या दादा के रूप में? तीसरा, नबूकदनेस्सर को दादा के बजाय पिता के रूप में संदर्भित करना आम सेमेटिक उपयोग है। यह आश्चर्य की बात है कि इसे एक तर्क के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। बात बस इतनी है कि वह पूर्वज था और बेलशस्सर उसका वंशज था। यदि आप अपने उद्धरण डीआर में पृष्ठ 17 और 18 को देखें डेविस, एक इंजीलवादी नहीं, अपने ओल्ड टेस्टामेंट गाइड टू डैनियल में कहते हैं, “आलोचनात्मक टिप्पणियों, विशेष रूप से सदी के अंत के आसपास, ने इस तथ्य को उजागर किया कि बेलशस्सर न तो नबूकदनेस्सर का पुत्र था और न ही बेबीलोन का राजा था। इसे अभी भी कभी-कभी डैनियल की ऐतिहासिकता के खिलाफ आरोप के रूप में दोहराया जाता है, और रूढ़िवादी विद्वानों द्वारा इसका विरोध किया जाता है। लेकिन 1924 से यह स्पष्ट हो गया है कि यद्यपि नबोनिडस नव-बेबीलोनियन राजवंश का अंतिम राजा था, बेलशस्सर प्रभावी रूप से बेबीलोन पर शासन कर रहा था। इस संबंध में, डैनियल सही है। 'पुत्र' का शाब्दिक अर्थ नहीं दबाना चाहिए; भले ही यह डैनियल की ओर से गलतफहमी पैदा कर सकता है, डैनियल की ऐतिहासिक विश्वसनीयता के खिलाफ एक मजबूत मामला इस तरह के कमजोर तर्कों को शामिल करने से नहीं बढ़ता है। तो ये उस प्रकार की ऐतिहासिक त्रुटियाँ हैं जिनके अस्तित्व में होने का आरोप है जो कुछ लोगों को दिखाती हैं कि डैनियल लेखक नहीं थे। आइए इस बिंदु पर विराम लें।

प्रतिलेखित: बेन हेल
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादन
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन,
टेड हिल्डेबैट द्वारा पुनः सुनाया गया